इकाई 7 संगम साहित्यिक परम्परा*

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 संगम साहित्यः परिचय

7.3 संगम साहित्य में ऐतिहासिक चेतना तथा ऐतिहासिक परम्परा

  7.3.1 अतीत का वर्णन

  7.3.2 ऐतिहासिक विवरण

7.4 रचना तथा संहिताकरणः इतिहास का निर्माण

7.5 अतीत का *प्रमाणीकरणः* संगम युग की ऐतिहासिकता

7.6 ऐतिहासिक परम्पराओं में निहित विरासत

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.10 संदर्भ ग्रंथ

7.11 शैक्षणिक वीडियो

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ पाएँगे कि :

- संगम शास्त्रीय काव्य को किस तरह व्यवस्थित किया गया है,
- विभिन्न ग्रंथों का कालानुक्रम,
- संगम काव्य के माध्यम से किस प्रकार की ऐतिहासिक चेतना प्रकट होती है, और
- उन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विवरणों को जिनका संगम काव्य में वर्णन है।

7.1 प्रस्तावना

अतीत के अध्ययन के लिए साहित्य बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि एक संकीर्ण अर्थ में यह इतिहास की शुरुआत का संकेत करता है। आरम्भिक ऐतिहासिक काल में तमिल क्षेत्र, जिसमें आज के तमिलनाडु तथा केरल शामिल हैं, का इतिहास संगम साहित्य के नाम से विख्यात साहित्यिक स्रोतों, अभिलेखीय स्रोतों तथा पुरातत्व के माध्यम से पुनर्निर्मित किया जा सकता है। इस इकाई में हम साहित्यिक स्रोतों पर मुख्य रूप से अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। यह इकाई न केवल संगम साहित्य में प्रतिबिम्बित होने वाले इतिहास के पुनर्निर्माण पर विचार करती है बल्कि इन कवियों की अतीत-संबंधी अवधारणाओं और ऐतिहासिक चेतना तथा इनके द्वारा प्रशंसित शासकों की वैधता पर भी दृष्टि डालती है। यह इकाई संगम काल, जिसे शास्त्रीय (classical) युग भी कहा जाता है, में संगम काव्य में निहित ऐतिहासिक चेतना का विश्लेषण करती है।

7.2 संगम साहित्यः परिचय

संगम साहित्य से अभिप्राय उस आरम्भिक तमिल साहित्यिक रचनाओं के भंडार से है जिनका हस्तांतरण मौखिक परम्परा के रूप में हुआ तथा जिन्हें सामान्य युग की प्रारम्भिक शताब्दियों में

*डॉ. एस. बी. दर्सना, पी. जी. एंड रिसर्च डिपार्टमेंट ऑफ़ हिस्ट्री, होली क्रॉस कॉलेज, तिरूचिरापल्ली, तमिलनाडु

तिथिबद्ध किया गया। 'संगम' (या विद्वत-सभा) शब्द सर्वप्रथम मध्यकालीन ग्रंथों में पाया जाता है तथा उन तमिल रचनाओं का संकेत करता है जिनको इन विद्वत-सभाओं में संकलित किया गया था। नक्कीरनार, जिसने इरैयनार अकप्पोरुल (आठवीं शताब्दी सी ई का एक ग्रंथ) पर भाष्य लिखा था, के अनुसार तीन संगम अस्तित्व में थे। सभी संगमों (कवियों की परिषदों) को पांड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था। प्रथम संगम का आयोजन *तेन/तेण* मदुरै (*तेन/तेण* का अर्थ दक्षिण से है) में हुआ था जो बाद में समुद्र में समा गया था। इस परिषद् में 4449 कवियों ने भाग लिया और यह 4440 वर्षों तक अस्तित्व में रही। इन कवियों के नामों की सूची में भगवान शिव, भगवान मुरुगा/मुरुगन, भगवान कुबेर तथा ऋषि अगस्त्य शामिल हैं। द्वितीय संगम का आयोजन कपाटपुरम में हुआ जो 3700 कवियों के साथ 3700 वर्षों तक अस्तित्व में रहा। दंतकथाओं के अनुसार तेन मदुरै और कपाटपुरम, दोनों, समुद्र में समा गए थे। इन दोनों संगमों में रचे गए ग्रंथ समय की मार से सुरक्षित नहीं बच पाए।

तृतीय संगम 1830 वर्षों तक अस्तित्व में रहा तथा इसे 49 पांड्य राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। वर्तमान में उपलब्ध ग्रंथ तृतीय संगम से संबंध रखते हैं जिनमें *तोलकाप्पियम* (तमिल व्याकरण की प्राचीन कृति), *एट्टुत्तोकाई* (*Ettuttokai*) (अष्ट-संग्रह – आठ साहित्यिक रचनाओं का एक संकलन जिसमें *नटरिणै, कुरुंतोकाई, ईंकुरुनुरू, पथित्रुपाथु/पथित्रुपथु, परिपादल, कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई, अकनानुरु तथा पुरनानुरु* शामिल हैं), और *पत्तुपट्टु* (दस दीर्घ कविताएँ जिनमें तिरुमुरुगात्रुप्पदै [*Tirumurugatruppadai*], *सिरुपानात्रुप्पदै, पेरुम्पानात्रुप्पदई, मुल्लईपट्टु, मदुरैकांची, नेदुनलवादई* [*Nedunalvadai*], *कुरिंजीपातु, पट्टिनापालै* तथा *मलैपादुकादम* [*Malaipadukadam*] शामिल हैं) समाविष्ट हैं।

कवियों की ऐसी सभा का 9000 वर्षों के लिए अस्तित्व में रहना, जिस तरह इसे बाद के ग्रंथों में बताया गया है, वास्तविक सम्भावना से परे है। यद्यपि तीन संगमों के संबंध में यह परम्परा बाद के समय की परिघटना है, इस साहित्य को सुदूर अतीत में स्थापित करना इस साहित्य परम्परा के महत्व में वृद्धि करने तथा तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक परिवेश में इसके महत्व को स्थापित करने का एक तरीका है। संगम कविताओं को चारणों और कवियों के यथार्थ भावों के साथ प्रकट माना जाता है जिनमें कुछ यथार्थ है तो अतिशयोक्ति का कुछ अंश भी है।

मूल रूप से ये कविताएँ मौखिक परम्परा के रूप में हस्तांतरित होती रहीं तथा इन्हें बाद के काल में संहिताबद्ध किया गया। इस विपुल भंडार की विभिन्न कृतियों का कालक्रम तय करना मुश्किल कार्य है। कविताओं की रचना तथा मौखिक परम्परा की शुरुआत सम्भवतः तीसरी शताब्दी बी सी ई में हुई थी। इस मौखिक साहित्य का संकलनों के रूप में संशोधन तथा संहिताकरण लगभग आठवीं शताब्दी सी ई में हुआ था। इस परिषद् को एक निश्चित तिथि में स्थापित करना कठिन है क्योंकि विभिन्न कृतियाँ अलग-अलग समयों से संबंध रखती हैं।

इन गीतों की विषयवस्तु को दो मुख्य शैलियों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है – *अकम* तथा *पुरम*। *अकम*-काव्य लोगों के आंतरिक जीवन से संबंध रखता है, जैसे प्रेम-प्रसंग तथा विवाह, जबकि *पुरम* का संबंध बाह्य जीवन से है, जैसे युद्ध। संगम साहित्य में उल्लिखित *तिणै* (*tinai*) की संकल्पना दोनों ही शैलियों के काव्य से संबंध रखती है।

संगम साहित्य में *तिणै* की संकल्पना भू-दृश्य के साथ-साथ प्रसंगानुरूप प्रेम तथा युद्ध की स्थितियों का संकेत करती है। *अकम*-काव्य में इन्हें पाँच प्रकार के भू-दृश्यों में बाँटा गया है जहाँ नायक तथा नायिका के आंतरिक जीवन की पाँच चरणों में चर्चा की गई है। *कुरिंजी* पर्वतीय *तिणै* या भू-दृश्य है जो प्रेमियों के मिलन से संबंधित है; *मुल्लै* या चरागाह क्षेत्र का संबंध अपने प्रेमी के लिए प्रतीक्षारत स्त्री के बिम्ब से है; *मरुतम* या नदी-द्रोणी का क्षेत्र नायक के विश्वासघात से संबंधित है, *नेयतल* या तटीय क्षेत्र विरह तथा विकलता से संबंधित है; *पालै* या शुष्क भू-क्षेत्र कई कठिनाइयों और प्रेमियों के वियोग को प्रकट करता है। इन पारिस्थितिकीय-क्षेत्रों के अपने विशिष्ट जीव, वनस्पतियाँ, समय, देवता, व्यवसाय तथा मौसम हैं। किसी विशिष्ट पारिस्थितिकीय क्षेत्र (*तिणै*) की कविताओं को उस क्षेत्र की अन्य परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना होता था। इन *अकतिणै* रचनाओं में मुख्य चरित्रों के नाम (नायक, नायिका, उनके मित्र तथा विमाताएँ [foster-mothers] इनमें प्रधान चरित्र हैं) प्रकट नहीं किए गए हैं। लेकिन राजाओं तथा मुखियाओं का उनसे संबंधित मिथकीय तथा ऐतिहासिक घटनाओं के साथ इन रचनाओं में वर्णन है।

पुरम-काव्य में *तिणै* की संकल्पना बाह्य जीवन से संबंधित है जिसमें युद्ध-प्रसंग, नैतिकता तथा जीवन के मूल्य शामिल हैं। युद्धों के चरणों का वर्णन *तिणै* के रूप में किया गया है। प्रत्येक *तिणै* युद्ध के विभिन्न चरणों में प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट फूल का संकेत करता है। वेत्ची *तिणै* मवेशियों की लूट के साथ युद्ध की शुरुआत का संकेत करता है। *वंची* (*Vanchi*) *तिणै* युद्ध की तैयारी जबकि *उज़िनै* (*Uzhinai*) *तिणै* घेरेबंदी का वर्णन करता है। *थंबई* (*Thumbai*) *तिणै* युद्ध की वास्तविक घटना से तो *वकाई* (*Vakai*) *तिणै* युद्ध में विजय से संबंधित है। *पुरम* गीत इनके मुख्य चरित्रों अर्थात राजाओं और मुखियाओं तथा युद्धस्थलों के नामों का उल्लेख करते हैं। कुछ कविताओं की प्रकृति दार्शनिक है जो जीवन की नश्वरता पर बल देती हैं।

बोध प्रश्न-1

1) संगम साहित्य के विषय में विस्तार से चर्चा कीजिए।

....

....

....

2) संगम साहित्य में *तिणै* की संकल्पना किस प्रकार अभिव्यक्त हुई है?

....

....

....

3) तीन संगमों तथा उनके अनुमानित काल का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

7.3 संगम साहित्य में ऐतिहासिक चेतना तथा ऐतिहासिक परम्परा

भारतीय समाज अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए सुविख्यात है और तमिल क्षेत्र इसका अपवाद नहीं है। तमिलों ने आज तक भी कई सदियों से अपनी विरासत तथा इतिहास को बचाए हुए रखा है। केवल साहित्यिक साक्ष्य पर आधारित घटनाओं को सुदूर अतीत में स्थापित करने की परम्परा भी यहाँ रही है। अब तक की गई ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक खोज़ों का प्रयोग तमिल संस्कृति को अत्यधिक पुरातन समय में विस्तारित करने के लिए किया जाता है।

अपनी विभिन्न विषयवस्तुओं के साथ संगम साहित्य सुदृढ़ ऐतिहासिक सामूहिक चेतना को प्रकट करता है। अतीत की सामूहिक स्मृति इन कविताओं में ऐतिहासिक परम्पराओं के रूप में स्थान पाती हैं और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समकालीन श्रोताओं के लिए भी इसी तरह व्यवहार करती हैं। स्मृति चयनात्मक होती है तथा अतीत का सम्पूर्ण सार समकालीन समाजों तक नहीं पहुँच पाता है। केवल उन ही घटनाओं को महत्व दिया जाता है जिन्हें कोई समाज याद रखता है और चाहता है कि भविष्य उन्हें याद रखे।

ऐतिहासिक पूर्व-बोध के तत्व तथा ऐतिहासिक जानकारी के समकालीन वर्णन इन शास्त्रीय कविताओं की दोनों ही शैलियों में पाए जाते हैं। आज उपलब्ध तमिल व्याकरण की प्राचीन पुस्तक *तोलकाप्पियम* 240 बार बिना नामों को प्रकट किए अपनी रचना के समय से पहले के ग्रंथों का उल्लेख करती है जिससे यह संकेत मिलता है कि व्याकरणिक नियमों को संहिताबद्ध किए जाने से पहले भी इसकी एक पूर्व-परम्परा और नियमों की व्यवस्था रही होगी।

यद्यपि संगम कृतियों को उन चारणों के उद्गार माना जाता है जिन्होंने राजाओं की सांसारिक गतिविधियों या प्रेम-प्रसंगों (*पुरम* तथा *अकम*) की प्रशंसा में इन गीतों को रचा था, उन्होंने अतीत में हो चुकी घटनाओं या अपने समकालीन घटना-प्रसंगों को सायास या अनायास दर्ज किया। इन कविताओं से अतीत की घटनाओं के साथ समकालीन सांस्कृतिक विवरणों को समझा जा सकता है।

समकालीन वर्णन अतीत की घटनाओं के अभिलेखन में प्राथमिकता रखते हैं। ऐतिहासिक चेतना के इन दो घटकों की इस इकाई में चर्चा की गई हैः

क) ऐतिहासिक अतीत का वर्णन जिसमें राजाओं की वंशावली, अतीत की घटनाओं, जैसे आक्रमण, वैदिक यज्ञ का संदर्भ, मिथकीय वंश-परम्परा, की चर्चा की गई है।

ख) ऐतिहासिक विवरण जो चारणों, कवियों तथा लोक गायकों द्वारा देखी गई घटनाओं तथा विकासक्रमों की जानकारी प्रदान करते हैं।

ये वर्णन *पुरम* गीतों के संदर्भ में प्रत्यक्षतः तथा *अकम* गीतों के संदर्भ में अप्रत्यक्षतः इन कविताओं में गुथे हुए हैं।

7.3.1 अतीत का वर्णन

संगम-कालीन कविताएँ प्रेम तथा युद्ध-प्रसंगों का वर्णन करते हुए अनायास ही बीते हुए ज़माने की जानकारी काव्यात्मक रूप से समाहित किए हुए हैं। यहाँ अतीत का वर्णन करते हुए वंशावली, वंश-परम्परा, *इतिहास-पुराण* परम्परा तथा अन्य क्षेत्रों के इतिहास की चर्चा की गई है।

राजाओं की वंशावली

संगम रचनाएँ यत्र-तत्र राजाओं की वंशावली का उल्लेख करती हैं। तीन प्रमुख राजाओं, नामतः **चेरों, चोलों** तथा **पांड्यों,** का सामान्यतः उनकी पूर्वज परम्परा के साथ उल्लेख किया गया है। अष्ट-संग्रह में से एक *पतित्रुपथु* में चेरों के इतिहास का वर्णन मिलता है जिसमें बाद के समय, संभवतः पूर्व-मध्यकालीन समय, में पश्च-लेख/परिशिष्ट भाग (epilogues) जोड़े गए हैं।

इस काव्य में 10 *तेण/तेन* (10 खंडों में 10 कविताएँ) शामिल हैं। प्रत्येक खंड एक चेर राजा का वर्णन करता है। प्रथम और अंतिम *तेन/तेण* अब उपलब्ध नहीं हैं और हमें *पथित्रुपाथु/पथित्रुपथु* में उल्लिखित पहले और दसवें राजा के नामों के विषय में कोई जानकारी नहीं है। दूसरा *तेन/तेण* उतियाँ चेरालाथन तथा वेंमल नल्लिनी के पुत्र राजा इमायावरम्बन नेदुचेरालाथन की वीरता का वर्णन करता है। उसके बारे में कहा जाता है कि उसने चेरों के राजचिह्न धनुष को हिमालय पर अंकित किया था और अपने शत्रुओं को पराजित कर युद्ध में अपार धन प्राप्त किया था। उसने अपने शत्रुओं से प्राप्त अपार धन को अपनी राजधानी वांची (Vanchi) की प्रजा में बाँट दिया था। उसे कदम्बों को हराने का श्रेय भी दिया गया था जो द्वीप पर रहते थे और उसने उनके कुल-देवता के वृक्ष को भी काट दिया था। दूसरा *तेण/तेन* कुमात्तूर कन्नानार द्वारा लिखा गया है जिसे 500 ग्राम तथा राजा की आय का एक हिस्सा भी राजा इमायावरम्बन से उपहार के रूप में प्राप्त हुए थे।

तीसरा *तेन/तेण* कवि पलै कौथमानार द्वारा इमायावरम्बन नेदुचेरालाथन के भाई पल्यानई सेल्केजुकुट्टवन की प्रशंसा में लिखा गया है। इसका पश्च-लेख कवि द्वारा स्वर्ग पहुँचने की इच्छा और इस हेतु राजा से देवताओं के लिए 10 यज्ञ करने में सहायता प्रदान करने की प्रार्थना करने की कहानी कहता है। दसवें यज्ञ के अंत तक कवि कौथमानार और उसकी पत्नी स्वर्ग पहुँच जाते हैं। इस राजा को उमरिकाडु क्षेत्र में अकप्पा (Akappa) के दुर्ग पर विजय का श्रेय भी दिया गया था।

चौथा *तेन/तेण* कप्पियात्रु कप्पियानर द्वारा राजा कलंकै कन्नी नर्मुदी चेराल पर लिखा गया है। उसे 400 स्वर्ण सिक्के तथा शासन करने हेतु राज्य का एक भाग उपहार में दिया गया था। कलंकै कन्नी नर्मुदी चेराल इमायावरम्बन तथा उसकी पत्नी प्रद्युम्न देवी की संतान थी। उसकी विख्यात विजय वाकै परंथलाई के युद्ध में पुली क्षेत्र के राजा नन्नन/नान्नान के विरुद्ध हुई थी।

पाँचवाँ *तेन/तेण* चेर राजा कदल पिराकोट्टिय सेनगुट्टुवन की प्रशंसा में लिखा गया है और इसे परणर (Paranar) द्वारा लिखा गया था जिसे उमरिकाडु क्षेत्र से प्राप्त होने वाला राजस्व उपहार में सौंपा गया था। वह एक चोल राजकुमारी से उत्पन्न इमायावरम्बन नेडुचेरालाथन का पुत्र था। उसे हिमालय से कुमारी (Kumari) के बीच शासन करने वाले राजाओं को पराजित करने का श्रेय भी दिया गया है जो स्पष्ट तौर पर एक अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण है। उसने नेरी वायिल के युद्ध में नौ चोल राजकुमारों को हराया था। छठा *तेन/तेण* कक्कई पडिनियार नचचेलैय्यार द्वारा चेर राजा अदुकोटपट्टू चेरालाथन के विषय में लिखा गया है। इस स्त्री कवियत्री द्वारा लाखों स्वर्ण सिक्के प्राप्त करने तथा एक पहाड़ी

के शीर्ष से आँख की परिधि में आने वाले क्षेत्र का दान पाने का उल्लेख है। अदुकोटपट्टू चेरालाथन कुट्टनाड/कुटनाडु से संबंध रखने वाले चेर वंश की शाखा के राजा चेरालाथन और उसकी रानी देवी, जो वेलावी कोमान की पुत्री थी, का पुत्र था। उसके राज्य से चुरा कर ले जायी गई बकरियों को उसके द्वारा पश्चिमी तट पर स्थित एक चेर बंदरगाह तोंदि (Tondi) में दंडकारण्य से वापस पश्चिमी तट पर स्थित चेर बंदरगाह तोंडई में लाने का उल्लेख मिलता है। उसकी उपाधि वन *वरम्बन* (*Vana Varanban*) थी जो आकाश तक उसकी शक्ति की सीमा होने का संकेत करती है।

सातवाँ *तेन/तेण* कवि कपिलार (Kapilar) द्वारा सेल्वकडुंगो वालियाडन पर लिखा गया था। कपिलार को राजा पर लिखे गए उसके दस गीतों के लिए राजा द्वारा हज़ारों स्वर्ण सिक्कों का उपहार प्रदान किया गया और साथ ही एक पहाड़ी के शीर्ष से नज़र में आने वाली भूमि भी प्रदान की गई। अपनी सैन्य शक्ति की अपेक्षा राजा की प्रशंसा विष्णु, जिन्हें मायावान कहा गया है और जिनके लिए उसने ओकांथुर (Okanthur) का गाँव दान में दिया था जिससे अच्छी गुणवत्ता का चावल वैदिक यज्ञों हेतु उपलब्ध कराया जाता था, की भक्ति के लिए अधिक की गई है।

आठवाँ *तेन/तेण* राजा पेरुमचेरल इरुम्पोराई की प्रशंसा में कवि अरिसिल किझर द्वारा लिखा गया है जिसे नौ लाख स्वर्ण सिक्कों के साथ राजा के राज्य में राज करने का अधिकार भी दिया गया था। लेकिन, कवि ने राजा को राज्य करने का अधिकार लौटा दिया। उसने चोलों और पांड्यों के अलावा तगादुर (Tagadur) क्षेत्र के अथियामन को हराया था। नौवाँ *तेन/तेण* पेरुमट्टुनल्लूर किज़हार द्वारा राजा कुडक्को इलांचेरल इरुम्पोराई की प्रशंसा में लिखा गया था और जिसे 32000 स्वर्ण सिक्के दान में प्राप्त हुए। यह राजा कुट्टनाड/कुटनाडु के स्वामी इरुम्पोराई और रानी वेनामल अंट्टुवनचेल्लै का पुत्र था। उसने चोल, पांड्य तथा विच्ची (Vichchi) राजाओं को पराजित किया। उसने राजधानी वांची से शासन किया जिसकी शक्तिशाली दैत्य अपनी शक्ति द्वारा सुरक्षा करते थे।

चेर राजाओं की वंशावली का वर्णन करते हुए *पतित्रुपाथु* यत्र-तत्र बिखरे हुए ऐतिहासिक तथ्यों के साथ चेर राजाओं के शासन का काव्यात्मक वर्णन प्रस्तुत करते हैं। इन कविताओं की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करना वास्तव में मुश्किल काम है। काव्यात्मक अतिशयोक्ति को इस वंशावली-संबंधी कृति में होना ही था क्योंकि ये कवि अपने संरक्षक-राजा की अनुकंपा की इच्छा रखते थे। सभी कवियों के लिए विभिन्न कालों से संबंध रखने वाले इन विभिन्न राजाओं की प्रशंसा में गीतों की रचना करना संभव नहीं रहा होगा। इन कविताओं को एक विशेष समय में किसी राजा-विशेष द्वारा रचे जाने का निर्देश दिया गया होगा तथा बाद में इन्हें एक साथ संकलित किया गया होगा। ब्राह्मणों, *ब्रह्मदेयों* और वैदिक यज्ञों का उल्लेख तमिल क्षेत्र में उत्तरी भाग के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। *पतित्रुपाथु* में बाद में जोड़े गए पश्च-लेख *पतिकम/पटिकम* वंशावली के रूप में अतीत के इतिहास को और साथ ही राजा की वीरता और विजयों के रूप में समकालीन प्रसंगों को दर्ज करते हैं। कविताओं के माध्यम से अतीत की स्मृतियों को पुनर्परिभाषित और नई पीढ़ी तक पुनः हस्तांतरित किया गया।

वंश-परम्परा

वंश एक पारिभाषिक शब्द है जो किसी कुल या कबीले का संकेत करता है जो समान पूर्वज से अपनी उत्पत्ति मानता है। समय के साथ विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक कारणों से वंश के कुछ सदस्य (संभवतः वरिष्ठ सदस्य) अतीत में लोकप्रिय रही ऐतिहासिक परंपराओं को समाहित कर वैधता का दावा कर सकते थे और स्वयं को वर्तमान में लोकप्रिय बना सकते थे।

वंशावली के अलावा नायकों का वंश (*अकम* तथा *पुरम*, दोनों, शैलियों में) इस तरह चित्रित किया जाता था कि उनके चरित्र को मान्यता प्राप्त हो सके। विभिन्न पदावलियों, जैसे 'कुलीन, गोत्र, महान् कुटुंब का उत्तराधिकारी (*उरवोन* [*Uravon*], *मारुगन, थोंडराल* [*Thondral*]), पुरातन परंपराओं के वाहक तथा महान् कुटुंब के वंशज' का प्रयोग राजाओं तथा नायकों के श्रेष्ठ वंश को दर्शाने के लिए किया जाता था (*पुरनानुरु* 24, 27, 32, 58, 159, 356, 399; *अकनानुरु* 352)। उपर्युक्त तीन राजाओं को महान् वंश से संबंध रखने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। किसी व्यक्ति का वंश राजा के रूप में उसकी महानता का सारतत्व था। कभी-कभी वंश का उपयोग न केवल राजा की प्रशंसा हेतु बल्कि ग़लतियों की ओर संकेत करने के लिए भी किया जाता था, जैसा कि *पुरनानुरु* के एक गीत (संख्या 43) से स्पष्ट होता है। *पुरनानुरु* की एक कविता (संख्या 45) चोल राजा करिकाल के वंश की प्रशंसा

उसके पूर्वजों की महानता का वर्णन करते हुए करती है जैसे शिबि जिसने एक कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर के माँस का दान किया था। शिबि की कहानी बौद्ध *जातकों* तथा *महाभारत* की कथा, दोनों, में पाई जाती है। कवि राजा के वंश पर प्रश्न करते हुए कहता है कि क्या वह वास्तव में चोलों के उस महान् कुल से संबंध रखता है क्योंकि उसने ब्राह्मणों पर अत्याचार किया है। किंतु अंततः वह राजा को अपने इस गीत में क्षमा प्रदान करता है तथा उसकी प्रशंसा करता है।

थुवरई (Thuvarai) (जिसकी पहचान कर्नाटक में होयसलों के द्वारसमुद्र से की गई है) के वेलिर (Velir) नामक शासक की महानता का वर्णन करते हुए उसके पूर्वजों की 49 पीढ़ियों की प्रशंसा की गई है (*पुरनानुरु* 201)। संभवतः वंश की प्राचीनता स्थापित करने के लिए सात पीढ़ियों को सात बार अंकित किया गया है। थुवरई (Thuvarai) के नगर की पहचान गुजरात के पश्चिमी तट पर स्थित द्वारका से भी की जाती है।

वैवाहिक संबंधों में भी स्त्री और पुरुष के वंश का महत्व ध्यान में रखा जाता था और इन शास्त्रीय कविताओं में ऐसे संदर्भ भी मिलते हैं कि ऐसे व्यक्ति के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करना असम्भव था जो किसी विशेष वंश से संबंध न रखता हो (*पुरनानुरु* 345, 353)।

इतिहास-पुराण परम्पराएँ

संगम साहित्य वैदिक धर्म के साथ संबंधित विभिन्न कथाओं के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराता है। इससे संकेत मिलता है कि तमिल कवि अपने स्थान-विशेष से बाहर स्थित देश के उत्तरी भाग में हो रहे विकासक्रमों से परिचित थे। यह याद रखा जाना चाहिए कि कुछ विद्वानों द्वारा संगम कृतियों के कुछ संकलन बहुत बाद में मध्यकाल (12वीं शताब्दी तक) में तिथिबद्ध किए गए हैं, जैसे *कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* और *तिरुमुरुगात्रुप्पदै*।

यद्यपि प्राचीन तमिलों के पाँच प्रकार के भू-परिदृश्यों में अपने-अपने देवता थे, जैसे सियोन/सेयोन (भगवान मुरुगा/सुब्रमण्य) पर्वतीय क्षेत्र *कुरिंजी* के, मायोन (भगवान विष्णु) चरागाह क्षेत्र *मुल्लै* के; वेंदन (इंद्र देव) नदी के तटवर्ती क्षेत्र *मरुतम* के; वरुण देव तटीय क्षेत्र *नेयतल* के और *कोतरावै/कोटरावई* (देवी दुर्गा) शुष्क क्षेत्र *पालै* की (*पुरनानुरु* 1 तथा *अकनानुरु* 1), लेकिन इनमें शिव का उल्लेख *अर्धनारीश्वर* (*पुरनानुरु* 1) तथा *त्रिपुरांतक* (*कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* 1) के रूप में है। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मंगलाचरण के श्लोक इन संकलनों में पेरुंडेवनार द्वारा लिखे गए हैं जिन्होंने *महाभारत* की तमिल में रचना की थी और जो 9वीं शताब्दी सी ई के पल्लव शासक नंदीवर्मा के समकालीन माने जाते हैं।

कुछ संगम गीतों में भारत के दो महान् संस्कृत महाकाव्यों *महाभारत* और *रामायण* का भी उल्लेख मिलता है जिससे यह संकेत मिलता है कि *तमिलकम/तमिलहम* के लोग भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी हिस्से के प्रमुख महाकाव्यों से परिचित थे। वैदिक देवताओं से संबंधित कथाओं का भी इन कविताओं में उल्लेख मिलता है। *पुरनानुरु* (2) में एक चेर राजा द्वारा अन्हवट (घोड़ों की आँखों का पर्दा जिससे वे सीधे ही देखें) लगाए घोड़ों को अधिकार में रखते पांडवों तथा कौरवों, जो पांडवों द्वारा धराशायी हो जाने से पूर्व स्वर्ण-मालाएँ (garlands) धारण किए हुए थे, की सेनाओं को भोजन कराने का उल्लेख मिलता है। यद्यपि भारत-युद्ध तथा संगमकालीन चेर आपस में समकालीन नहीं हो सकते हैं, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि *महाभारत* की कथा प्रचलन में थी तथा चेर राजा द्वारा अपने उन पूर्वजों की स्मृति में चावल का भोज दिया गया हो जिन्होंने किंवदंती बन चुके इस अखिल भारतीय युद्ध में हिस्सा लिया हो, जैसा कि तमिल विद्वानों ने अवलोकन किया था। *पेरुम्पानात्रुप्पदई* (415-417) में दो-पचास (100 कौरव) योद्धाओं तथा पांडवों के बीच रथों के साथ हुए महान् युद्ध का उल्लेख है।

दुर्योधन द्वारा पांडवों हेतु लाक्षागृह का निर्माण और उन्हें जलाकर मार डालने का प्रयास तथा पवन देव के पुत्र भीम की सहायता से उनके बच निकलने की कथा (*कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* 25) का उल्लेख भी मिलता है। अक्रूर का उल्लेख अक्कुरन/अक्कूरन के रूप में है जो *महाभारत* के युद्ध में कौरवों के विरुद्ध पांडवों के पक्ष में लड़ा था (*पथित्रुपाथु/पथित्रुपथु* 14: 5.7)। *कलिटट्टोकाई* (52) में भीम के द्वारा दुर्योधन की जंघा पर प्रहार कर उसके वध का उल्लेख है। *सिरुपानात्रुप्पदै* (238, 241) में खाण्डव वन को नष्ट करने वाले अर्जुन के भाई भीम की पाककला पर चर्चा है।

भगवान राम द्वारा रावण के विरुद्ध श्रीलंका के लिए अभियान पर निकलते समय पक्षियों को चुप कराने का उल्लेख भी है (*पुरनानुरु* 70)। चोल राजा इलमचेचेन्नी से उपहार में स्वर्णाभूषण प्राप्त करने पर कवि उन पोडी पेरुवुदैयार के रिश्तेदार उपहार पाने के उल्लास में आभूषणों को ग़लत ढंग से पहनने लगे। कवि द्वारा उनकी तुलना रावण द्वारा अपहरण कर लिए जाने पर सीता द्वारा फेंके गए आभूषणों को वानरों द्वारा धारण कर लेने से की गई है (*पुरनानुरु* 378)।

पुरनानुरु का एक गीत (56) वैदिक देवताओं जैसे यम, बलराम, कृष्ण तथा सुब्रमण्य का उल्लेख करता है तथा उनकी तुलना पांड्य राजा इलावंतिकै थुंजिय ननमाराण के वीरतापूर्ण गुणों से करता है। एक अन्य गीत (*पुरनानुरु* 58) यह संकेत करता है कि चोल तथा पांड्य राजाओं का स्वरूप गौर वर्ण बलराम तथा श्याम वर्ण कृष्ण के समान था। *पेरुम्पानात्रुप्पदई* (29-30) में श्याम वर्ण के विष्णु तीन लोकों को मापने वाले त्रिविक्रम के रूप में उल्लिखित हैं। यही कविता (402) ब्रह्मा के भगवान विष्णु के नाभि-कमल से प्रकट होने का उल्लेख करती है। *अकनानुरु* (59) में कृष्ण द्वारा गोपियों के वस्त्र चुरा लेने तथा उन्हें यमुना के तट पर स्थित वृक्षों की पत्तियों से बने वस्त्र देने के प्रसंग का उल्लेख मिलता है। *कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* (103) में कृष्ण के हाथों कंस द्वारा भेजे गए तथा घोड़े के रूप में आए दैत्य के वध की घटना का उल्लेख भी मिलता है। *मदुरैकांची* (591) में भगवान विष्णु के जन्म-नक्षत्र थिरुवोणम के अवसर पर आयोजित होने वाले उत्सव का भी उल्लेख मिलता है।

रावण द्वारा शिव के निवास कैलाश पर्वत को उठाने का वर्णन *कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* (38) में मिलता है। गुरु बृहस्पति तथा शुक्राचार्य द्वारा लिखे गए राजनीतिक *प्रबंध*-ग्रंथों का उल्लेख (*कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* 99) भी मिलता है। इसी कविता में शिव के उस स्वरूप को कालांतक/कलंतक कहा गया है जिसने मृत्यु के देवता यम का वध किया था (*कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* 124)। ब्रह्मा द्वारा जल-प्रलय (*कलि*) के बाद सृष्टि की रचना और *दक्षिणामूर्ति* का स्वरूप (*कलिट्टोकाई/कालिट्टोकाई* 133) तमिल साहित्य में वैदिक कथाओं के प्रभाव का संकेत करते हैं।

परिपादल (19/50-52) में अकल्या/अहिल्या के साथ छल करने के लिए इंद्र द्वारा गौतम ऋषि का रूप धरने का उल्लेख है। *परिपादल* भगवान विष्णु और भगवान मुरुगा के यश को रेखांकित करता है, यद्यपि इस कृति को बाद की तिथि का माना जा सकता है।

वैदिक अनुष्ठानों का आयोजन

तमिल साहित्य में वैदिक यज्ञों का उल्लेख है जो भारत के उत्तरी भाग के संपर्क में आने और दक्षिण भारत में ब्राह्मणों के पुरोहित वर्ग के प्रवास से प्रचालन में आए थे। चेर राजा पल्यानै सेलकेलुकुट्टुवन को वैदिक यज्ञ करने का श्रेय दिया गया है और इन यज्ञों से उठने वाले धुएँ के आकाश को छूने का उल्लेख है (*पतित्रुपाथु* 3: 21)। पांड्य राजा पल्यानै मुतुकुटुमि पेरुवलुति तथा चोल राजा राजसुयम वेट्टी पेरुनार्किलि से इन राजाओं द्वारा वैदिक यज्ञों को दिए गए महत्व का पता चलता है। यह संभवतः उत्तर भारत से आई विचारधाराओं और इन शासकों द्वारा आनुष्ठानिक नियंत्रण पाने और अपनी सत्ता को वैध ठहराने के कारण था।

मदुरैकांची (759-760) में राजा नेदुंचेलियन को कवि द्वारा मदुरै में यज्ञ के आयोजन की सलाह दी गई है जिस तरह उसके पूर्वज पालसलाई मुदुकुडुमी ने भी किया था। *अकनानुरु* के एक गीत (13) में कोडाई (Kodai) क्षेत्र के मुखिया पन्नी द्वारा किए गए यज्ञ का उल्लेख है। *पुरनानुरु* (6,9,15, 361) में ब्राह्मणों के साथ उनके द्वारा किए जाने वाले यज्ञों का भी उल्लेख है।

तमिल क्षेत्र के बाहर के क्षेत्रों का अभिलेखन

संगम साहित्य कहीं-कहीं तमिल क्षेत्र से बाहर मौजूद राजाओं तथा राज्यों का भी उल्लेख करता है। इससे पता चलता है कि प्राचीन तमिल लोग इस तरह के राज्यों तथा स्थानों के अस्तित्व से परिचित थे तथा इन्हें इन कविताओं में अभिलिखित किया गया है। स्मृति के माध्यम से ये इन कविताओं में समाहित तथा पुनः समाहित होते रहे।

यद्यपि तमिल शासकों का अधिकार तमिल क्षेत्र में था वे भारतवर्ष के संपूर्ण क्षेत्र से अवगत थे। *पुरनानुरु* (3) पांड्य राजा पल्यागसलाई मुदुकुडुमी पेरुवाजुथि के राज्यक्षेत्र के विस्तार का वर्णन उत्तर में हिमालय, दक्षिण में कुमारी और पूर्वी व पश्चिमी छोरों पर स्थित सागर तक बताता है। गंगा नदी का

उल्लेख *पट्टिनप्पालै* (190), *पेरुम्पानात्रुप्पदई* (429, 433), *नटरिणै* (7) में मिलता है जिसे स्वर्ग से निकलने वाली नदी, देवताओं के निवास से निकलने वाली नदी, नदी जिसे पार करना कठिन हो और समुद्र में प्रवेश करने वाली नदी के रूप में वर्णित किया गया है।

इन शास्त्रीय कविताओं में हिमालय का भी उल्लेख मिलता है। एक *पुरनानुरु* गीत (132) उत्तर में हिमालय और दक्षिण में अय राज्य के अस्तित्व के कारण दुनिया में संतुलन स्थापित होने का उल्लेख करता है। हिमालय में पाए जाने वाले जल-प्रपातों का उल्लेख भी *पुरनानुरु* (369) में है। *नटरिणै* में समुद्र का वर्णन निचले क्षेत्र में तथा उठे हुए क्षेत्र में हिमालय के अवस्थित होने का उल्लेख है। ये वर्णन सम्भवतः यह संकेत करते हैं कि तमिल कवियों को या तो हिमालय जैसे सुदूर स्थानों की प्राथमिक रूप से जानकारी थी या उन्होंने व्यापारियों और तीर्थयात्रियों से इन दूर स्थित क्षेत्रों के विषय में जानकारी पायी थी और अपने काव्यों में इन्हें अमर बना दिया।

उत्तर के राजा

संगम साहित्य तमिल क्षेत्र में शासन करने वाले महत्वपूर्ण शासकों – पांड्यों (तमिल क्षेत्र का सबसे पुराना राजवंश जो तमिलनाडु के दक्षिणी हिस्से में शासन करता था), चेरों (मोटे तौर पर आधुनिक समय के केरल क्षेत्र के शासक) तथा चोलों (मध्य तमिलनाडु के शासक) – का उल्लेख है। दिलचस्प है कि अशोक के अभिलेख पाडों (पांड्य), चोडों (चोल) और केरलपुत्रों (चेर) तथा सत्यपुत्रों का दक्षिणी पड़ोसियों के रूप में उल्लेख करते हैं।

अरुवर, ओलियार, वातकार जैसी जनजातियों, जिन्होंने तमिल क्षेत्र के उत्तरी हिस्से (आज के आंध्र तथा कर्नाटक क्षेत्र) पर शासन किया था, का उल्लेख भी इन तमिल शास्त्रीय ग्रंथों में मिलता है। कविताओं में तमिल क्षेत्र की तीन मुख्य राजसत्ताओं द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों के उन राजाओं, जो तमिल से भिन्न भाषाएँ बोलते थे, के विरुद्ध छेड़े गए युद्धों का वर्णन मिलता है।

अपने प्रियजनों को पीछे छोड़कर संपत्ति की तलाश में निकलने वाले नायक *अकनानुरु* गीतों की एक सामान्य विषयवस्तु हैं। *अकनानुरु* कविता (251) एक नायक का वर्णन करते हुए उल्लेख करती है कि नायिका की सखी उसे समझाती है कि नंदों का धन भी नायक को नहीं रिझा पाएगा और वह जल्द ही लौटेगा।

एक अन्य प्रकरण में पुनः नंदों की संपत्ति का उल्लेख आया है। *अकनानुरु* (265) पाटलिपुत्र नगर का उल्लेख करता है जहाँ नंदों को खज़ाना मिला और उन्होंने उसे गंगा नदी के भीतर छुपाया हुआ था।

मौर्यों, जिनके रथों ने चट्टानी सतह को समतल कर दिया था, का उल्लेख संगम साहित्य में दर्ज अतीत के इतिहास की ओर संकेत करता है। मौर्यों के रथों, जिनके लोहे के पहियों ने सीमा-क्षेत्रों की चट्टानी सतह को कुंद बना दिया था, का संदर्भ (*अकनानुरु* 69, 251) मौर्यों द्वारा मोकुर के राजा के विरुद्ध कोसरों की मदद करने का संकेत करता है। *पुरम* गीत श्वेत छत्रों और पताकाओं से सुसज्जित उच्च गुणवत्ता वाले मौर्य रथों का वर्णन करते हैं (*पुरनानुरु* 175)।

अकनानुरु (281) में दक्षिणी भाग में मौर्य सेना के आक्रमण का उल्लेख है जिसकी अगुआई वतुकार (Vatukars) कर रहे थे। जब इस कविता का नायक संपत्ति की लूट के लिए सीमा क्षेत्र को पार करता है नायिका अपनी सखी को बताती है कि नायक ने सीमा को पार कर लिया है जहाँ दक्षिणी हिस्सों पर आक्रमण हेतु मौर्यों के रथ चट्टानों से कटे हुए मार्ग पर चले आ रहे हैं जिनको अग्र भाग में वतुकारों का समर्थन मिला हुआ है।

चोलों, पांड्यों और चेरों, जिन्हें वेंटारों (Ventars) के रूप में जाना जाता था, के अलावा अन्य मुखिया भी थे जिन्होंने अपने साहस, न्यायपूर्ण शासन और कवियों और चारणों को दिए गए सम्मान के कारण महत्व प्राप्त किया था। संगम साहित्य सात मुखियाओं की महान् दानदाताओं के रूप में प्रशंसा करता है जिन्होंने पक्षियों तथा मोगरे की लताओं के अतिरिक्त चारणों को बहुत कुछ उपहार में दिया था। संगम कविताएँ सात राजाओं, जिनके नाम परि, करि, अय, ओरि, पेगन, अथियामन और नल्लि/नल्ली हैं, की विनम्र उदारता का उल्लेख करते हैं। उनकी कथाओं तथा उदारता को एक से अधिक जगह पर दोहराया गया है (*पुरनानुरु* 158, *सिरुपानात्रुप्पदै* 84-115) और उनकी महानता इन कथाओं और कविताओं में अमरता पा गई है।

कवयित्री अवैयार/औवैयार तगादुर के मुखिया अथियामन के साहस का वर्णन करते हुए यह तथ्य भी दर्ज करती हैं कि उसके महान् पूर्वजों द्वारा यज्ञों का निष्पादन किया गया तथा उन्होंने तमिल क्षेत्र में गन्ने की खेती का प्रचलन करवाया (*पुरनानुरु* 99)। यह विश्वास कि अथियामन के पूर्वज तमिल भूमि में विदेशी क्षेत्र से गन्ने की खेती लाए थे (*पुरनानुरु* 392) बाद के समय में भी प्रचलित था जैसा कि विलियम लोगन ने *मालाबार मैनुअल* में दर्ज किया है।

पुरम गीत सामान्यतः नायक के पूर्वजों का उल्लेख करते हैं तथा कभी-कभी यह वंशावली एक मिथकीय पूर्वज-परम्परा का रूप ले लेती है। *पेरूम्पानत्रुप्पदई* के नायक का उल्लेख तोंडईमान (Tondaiman) के वंशज के रूप में है और अंततः भगवान विष्णु के वंशज के रूप में। यह एक ऐसी परम्परा थी जो मध्यकाल में भी जारी रही। इसका पता हमें अभिलेखों से चलता है जिनमें राजनीतिक तथा मिथकीय, दोनों, पूर्वज-परम्पराओं को तमिल क्षेत्र में पल्लवों से शुरुआत के रूप में उद्धृत किया जाता था। यह देखा गया है कि ऐसे 30 से अधिक उदाहरण हैं जहाँ इन गीतों में पूर्वज-परम्परा का उल्लेख किया गया है।

बोध प्रश्न-2

1) 'संगम साहित्य अतीत की घटनाओं के अभिलेखांकन के माध्यम से ऐतिहासिक चेतना को संरक्षित करता है'। इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

....

....

....

2) संगम साहित्य में प्रतिबिम्बित वैदिक अनुष्ठानों के निष्पादन की प्रकृति का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

3) संगम साहित्य में *इतिहास-पुराण* परम्परा की उपस्थिति को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

4) विभिन्न प्रक्षेत्रों का संगम साहित्य में किस प्रकार निरूपण किया गया है?

....

....

....

7.3.2 ऐतिहासिक विवरण

संगम साहित्यिक कृतियों का उपयोग प्राथमिक रूप से आरम्भिक ऐतिहासिक काल, जिसके ये कृतियाँ समकालिक थीं, के इतिहास की पुनर्रचना हेतु किया गया है।

हेरोडोटस की *हिस्टरीज़* की तरह ही संगम रचनाएँ आरम्भिक ऐतिहासिक काल के दौरान जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करती हैं। इस प्रकार वे बीते युग की ऐतिहासिक विरासत का गुंणगान करती हैं। यह साहित्य उन विभिन्न ऐतिहासिक युद्धों का विवरण देता है जो संगम काल के विभिन्न शासकों के बीच लड़े गए थे।

राजाओं तथा राज्यों के ऐतिहासिक विवरण

आठ संग्रहों में शामिल *अकम* तथा *पुरम* गीत उन कुछ घटनाओं का उल्लेख करते हैं जो तब घटित हुई थीं। ये सभी पृथक तथा लघु कविताएँ हैं। दस विस्तृत कविताओं *पाथुप्पटटू* (*Pathupattu*) में कुछ ऐसी रचनाएँ हैं जो विशेष रूप से किसी एक राजा पर ही केंद्रित हैं। ये गीत अपनी प्रकृति में विवरणात्मक तथा विस्तृत हैं। ये कविताएँ लघु-स्वरूप की *मुल्लैपट्टू* (103 पंक्तियाँ) से लेकर सबसे

विस्तृत *मदुरैकाँची* (782 पंक्तियाँ) भिन्न-भिन्न स्वरूप की हैं। एक चारण किसी राजा से पर्याप्त उपहार पाने के बाद दूसरे चारणों को उसी राजा के पास जाने का रास्ता दिखाता था, उस राज्य तक पहुँचने के रास्ते तथा भूगोल को समझाते हुए। इसे *आत्रुप्पदाई* (शाब्दिक अर्थ 'राह दिखाना') कहा जाता था। दस लम्बी कविताओं में पाँच *आत्रुप्पदाई* कविताएँ हैं। इनमें से चार (*पोरुनरत्रुप्दाई, पेरुम्पनात्रुप्पदाई, सिरूपानात्रुप्पदै, मलैपादुकडम* या *कूथात्रुप्पडै*) चारणों को राजा तक पहुँचने की राह बताते हैं तो पाँचवाँ (*तिरुमुरुगात्रुप्पादै*) ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है। *पट्टिनापालै* तथा *मदुरैकांची* राजाओं तथा राज्यों के विषय में मूल्यवान जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

चोल सम्राट करिकाल दस लम्बी कविताओं में से दो का नायक है जिनका नाम *पोरुनरात्रुप्पदै* तथा *पट्टिनाप्पालै* है। इनकी रचना कदियालुर उरूथिरन कन्नानार ने की थी। इन कविताओं से बंदरगाह-नगर कावेरीपुम्पट्टिनम, जहाँ कावेरी नदी सागर से मिलती थी, का विस्तृत विवरण मिलता है। यह बंदरगाह-नगर व्यापारिक गतिविधियों तथा आयात और निर्यात में संलग्न जहाज़ों की आवाजाही से गुलज़ार था। नीचे उद्धृत पंक्तियों में यह पण्य-वस्तुओं की जानकारी देता है जिससे फलते-फूलते व्यापार का पता चलता है।

हिमालय भेजता है रत्न और स्वर्ण
जबकि कुडा पहाड़ियों से आता है चंदन काष्ठ
और अखिल; दक्षिणी सागर से आते हैं मोती
लाल मूंगा पूर्वी सागर से
गंगा और कावेरी लाती हैं
अपनी उपज; लंका से आता है वहाँ का भोजन
और बर्मा से विरल विनिर्मित वस्तुएँ

215-221, *चेलैया,* 1946

यह कविता तिरुमावलवन के नाम से ज्ञात एक राजा का वर्णन करती है जिसकी पहचान करिकाल से की गई है। उसका चित्रण एक व्याघ-शावक के रूप में किया गया है जिसने ओलियार, अरुवलार, कुडावर/कुदावर, पोडुवार, इरुंगोवेल, थेन्नावन, वडावर/वडावार जैसे कई शासकों को पराजित किया। इसके अतिरिक्त उसे बहुत से तालाबों का निर्माण कर चोल देश को अधिक हरा-भरा और समृद्ध बनाने का श्रेय भी दिया गया है। उसने वन-भूमि को नष्ट कर चोल राज्य का विस्तार करने हेतु कई नए नगरों का भी निर्माण किया। उसे कावेरी नदी में एक बाँध, जिसे *कल्लनै* (पाषाण-निर्मित बांध) कहा जाता था, के निर्माण का श्रेय भी दिया गया है।

मुदथामा कन्नियार द्वारा रचित *पोरुनरात्रुप्पदै* करिकाल की प्रशंसा में रचा गया है जो वेन्नि (जिसकी पहचान आज के तिरुवरुर ज़िले में स्थित कोविल वेन्नि से की गई है) में उसकी युद्ध कला का वर्णन करता है। चूँकि यह करिकाल के केवल शुरुआती युद्धों का उल्लेख करता है अतः इसे *पट्टिनापालै* से पहले की रचना माना जाता है। कदियालुर उरुथिरन कन्नानार द्वारा रचित *पेरुम्पानात्रुप्पदई* के नाम से ज्ञात एक अन्य *आत्रुप्पदाई* रचना कांचीपुरम के तोंडैमन इलांथिरायण के साहस तथा उदारता का वर्णन करता है। यह कवि इस राजा तक पहुँचने के मार्ग में पड़ने वाले भू-दृश्यों का वर्णन करते हुए अन्य कवि को राह बताता है और यह तमिल क्षेत्र के विभिन्न भू-दृश्यों पर रोशनी डालता है।

संगम कवि विभिन्न मार्गों का वर्णन करते हैं जिनका अनुसरण कर वे विभिन्न राज्यों में वहाँ के मुखियाओं की प्रशंसा में गीत रचकर उपहार पाने की इच्छा से पहुँचते हैं। *आत्रुप्पदाई* साहित्य विशेष रूप से राजा तक पहुँचने हेतु एक चारण द्वारा पार किए जाने वाले विभिन्न भू-दृश्यों में स्थित गाँवों और नगरों का वर्णन करता है। नाथथनार द्वारा रचित *सिरुपनातरुप्पदाई* में ओयमानाडु के राजा नल्लियाकोडन की प्रशंसा की गई है। दिलचस्प ढंग से यह चेरों की राजधानी वांची, पांड्यों की राजधानी मदुरै तथा चोलों की राजधानी उरथै (Urathai) का वर्णन करता है। चेर राजा की प्रशंसा ऐसे व्यक्ति के रूप में की गई है जिसने धनुष के राजचिह्न को हिमालयों में अंकित कर दिया था (*सिरुपनातरुप्पदाई* 48-49)। मदुरै नगर की प्रशंसा ऐसे नगर के रूप में की गई है जहाँ तमिल भाषा फल-फूल रही थी। यह कवि उन कई स्थानों का वर्णन करता है जो इस राजा के राज्य की ओर जाने के मार्ग में पड़ते हैं। आमुर, वेलूर/वेल्लूर, एइर्पपट्टिनम, माविलंगई, आदि नगरों का वर्णन भी किया गया है। इन स्थानों की पहचान तमिलनाडु के उत्तरी भागों में स्थित स्थानों से की गई है।

संगम काल के सात प्रसिद्ध उदार राजाओं को उनके कृत्यों के साथ इस कविता में दर्ज किया गया है और नल्लियकोडन की उदारता की इन सबमें श्रेष्ठता स्थापित की गई है।

मदुरैकांची की रचना पांड्य राजा नेदुचेलियन की प्रशंसा में की गई है। यह कविता मनोहारी ढंग से मदुरै के भू-दृश्य का वर्णन करती है। इसकी ऊँची दीवारों, दुर्गीकरण, खाई-खंदक (moat), चौड़ी सड़कों, पूजा स्थलों तथा विभिन्न व्यवसायों में संलग्न लोगों का वर्णन भी किया गया है। यह कविता बताती है कि प्राचीन महान् कुटुम्ब से संबंध रखने वाले राजा नेदुंचेलियन ने तलैलंकनम में अपने शत्रुओं को पराजित किया तथा सालियुर (Saliyur) के बंदरगाह-नगर पर कब्ज़ा कर लिया। उसने कोरकै में शासन किया जो उसके नियंत्रण में एक बंदरगाह-नगर था। इस कविता में बहुत ही सूक्ष्म जानकारी, जैसे राजा द्वारा पहने जाने वाले कलफ़दार सूती वस्त्र, का उल्लेख भी मिलता है (720-721)।

युद्धक्षेत्र

यह साहित्य युद्ध तथा युद्धों की विभीषिका का जीवंत वर्णन करता है। युद्ध के संदर्भ *अकम* तथा *पुरम*, दोनों, कविताओं में मिलते हैं। युद्ध में गए हुए नायक की वीरता का वर्णन करते हुए *अकम* कविताएँ विस्तृत रूप से शत्रु सेनाओं, युद्धक्षेत्र तथा अंतिम विजय का उल्लेख करती हैं। नायिका को आश्वस्त किया जाता है कि नायक शीघ्र ही घर लौट आएगा। *पुरम* कविताओं में उनके द्वारा प्राप्त विभिन्न विजयों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई है। यहाँ तीन महत्वपूर्ण युद्धों का वर्णन किया जा रहा है ताकि शास्त्रीय काव्यों में युद्धों के बखान के स्वरूप को समझा जा सके।

वेन्नि परंतलाई के युद्ध में युवा चोल राजा करिकाल द्वारा दो मुख्य राजाओं तथा 11 मुखियाओं को हराने की बात कही गई है। *अकनानुरु* (246) वर्णन करती है कि युद्ध के वाद्य कोने में पड़े हुए थे जब साहसी करिकाल ने सभी राजाओं को पराजित कर दिया। *अकनानुरु* (55) वेन्नि युद्ध क्षेत्र का साक्ष्य देता है जहाँ चेर राजा, जो पीठ पर वार होने से घायलावस्था में था, ने उत्तर की ओर खड़े होकर हाथ में तलवार लेकर आत्महत्या कर ली क्योंकि पीठ पर हमले से घायल होना अपमानजनक माना जाता था। एक कवयित्री राजा करिकाल को सम्बोधित करते हुए वस्तुतः इस आत्मघात के कृत्य के लिए चेर राजा की प्रशंसा करती है (*अकनानुरु* 66)।

करिकाल चोल से संबंधित अन्य युद्ध वागई परंतलाई में हुआ था जहाँ उसने नौ शासकों को हराया जिन्होंने अपने राजकीय छत्र गवाँ दिए थे और जो लड़ाई के मैदान से भाग खड़े हुए थे (*अकनानुरु* 125)। *पोरुनरत्रुप्पदै* (*Porunaratruppadai* 139-46) ने युवा करिकाल द्वारा दो राजाओं – चेर तथा पांड्य राजा – की पराजय की तुलना बाघ के शावक द्वारा अपने प्रथम प्रयास में ही हाथी पर विजय से की है। सम्भवतः यह युद्ध वेन्नि की लड़ाई के ही क्रम में था। इन युद्धों के माध्यम से करिकाल ने अन्य राजाओं के ऊपर अपना आधिपत्य जमा लिया।

अन्य प्रमुख युद्ध जिसका उल्लेख हुआ है वह आलंकनम का युद्ध है। पांड्य राजा सेलियान ने सात शासकों को पराजित किया जिनके नाम चेर, चोल, तिथियन/तिथियान, एलिनी, एरुमयुरान, इरूंकोवेनमन तथा पोरूनन थे। जब इस युवा राजा को अपने क्षेत्र में हमले की जानकारी हुई तो उसने एक कविता की रचना की जिसमें उसने कहा कि यदि वह शत्रुओं को पराजित नहीं करता है और उनके राज-छत्रों का हरण नहीं करता है तो उसकी प्रजा उसे एक दुष्ट राजा कहते हुए कोसेगी। दिलचस्प रूप से एक कवि इस युद्ध का साक्षी बना जो इसे यह कहते हुए दर्ज करता है कि सेलियान युद्ध में एक हाथी की तरह प्रवेश करता है तथा कई सैनिकों का सामना करता है (*पुरनानुरु* 72)। कवि यह निष्कर्ष निकालता है कि युद्ध शीघ्र ही समाप्त होगा तथा कुछ ही लोग बचे रह पाएँगे (*पुरनानुरु* 79)।

राजा सेलियान ने उन सभी को एक ही दिन में युद्ध क्षेत्र में धराशायी कर दिया और शत्रु राजाओं के श्वेत छत्रों पर अधिकार कर लिया (*पुरनानुरु* 25, 76, *अकनानुरु* 36)। एक कवि (*पुरनानुरु* 76) युद्ध के प्रसंगों को सुनकर इस विजय को अभूतपूर्व विजय के रूप में दर्ज करता है।

समकालीन घटनाओं का अभिलेखांकन

अधिकतर कविताएँ अतीत की घटनाओं का वर्णन करती हैं और कुछ गीत उन घटनाओं का विवरण देते हैं जिनको कवियों द्वारा दर्ज किया गया है। *पुरनानुरु* गीत (46) का एक कवि चोल राजा की आलोचना

इस बात के लिए करता है कि वह युद्ध में पराजित राजा की दो संतानों को हाथी के पाँव के नीचे कुचलकर मारना चाहता है। यह कवि राजा की शिबि के वंशज के रूप में प्रशंसा करता है जिसने एक कबूतर के जीवन की रक्षा हेतु स्वयं के शरीर के माँस का दान किया था और साथ ही राजा को इन बालकों की निर्दोषता के विषय में बताता है और उचित कार्य करने का विकल्प उस पर छोड़ता है।

मुखिया परी, जो युद्ध क्षेत्र में अन्य राजाओं द्वारा मारा गया था, की पुत्रियाँ यह कहकर शोक प्रकट करती हैं कि पिछली पूर्णिमा के दिन उनका पिता और उसका राज्य जीवित थे जबकि इस पूर्णिमा के दिन उनके पिता युद्ध में मारे गए हैं और उनका राज्य छीन लिया गया है (*पुरनानुरु* 112)।

कवि कपिला, जो स्वयं को एक ब्राह्मण बताता है, परी की इन दो पुत्रियों की ज़िम्मेदारी लेता है। वह कुछ मुखियाओं के पास जाकर इन बालाओं को विवाह में स्वीकार करने की प्रार्थना करता है और गीतों में उन्हें संबोधित करता है। एक कवयित्री लिखती है कि उसे राजा एवी के प्रातःकाल में गम्भीर रूप से घायल हो जाने की सूचना मिली है और वह इस पर विश्वास नहीं कर सकी है। वह प्रार्थना करती है कि यह सूचना निराधार हो (*पुरनानुरु* 233)।

संगम कवि न केवल अतीत और अपने समकालीन समय के राजनीतिक इतिहास का उल्लेख करते हैं बल्कि लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का भी उल्लेख करते हैं। भू-परिदृश्य का पाँच प्रकारों में विभाजन, उनके व्यवसायों, संगीत परम्परा, समय, मौसम, पक्षियों, जल-स्रोतों, वनस्पति, जीव-जंतुओं का उल्लेख भी संगम कविताओं में पर्याप्त रूप से उपलब्ध है जो इस शास्त्रीय (classical) काल में अस्तित्व में रही सामाजिक परिस्थितियों के विषय में मूल्यवान जानकारी उपलब्ध कराता है।

आर्थिक परिस्थितियाँ, जैसे आंतरिक व्यापार, रोम तथा अन्य देशों के साथ बाह्य व्यापार (जिसकी पुष्टि विदेशी साहित्यिक स्रोतों जैसे *पेरिप्लस ऑफ़ द एरीथ्रियन सी* तथा टॉलेमी की कृति से भी होती है), उत्पादन की प्रक्रिया, वस्तु विनिमय, विभिन्न व्यवसायों/उद्योगों/उपजीविकाओं का भी इन कविताओं में उल्लेख है। चेरों के बंदरगाह-नगर मुज़िरिस में समुद्र से आने वाले रोम के स्वर्ण के बदले ले जाए जाने वाली काली मिर्च के ढेर पड़े होने का उल्लेख मिलता है (*अकनानुरु* 149, *पुरनानुरु* 343)।

बोध प्रश्न-3

1) संगम साहित्य में ऐतिहासिक विवरण किस प्रकार दर्ज हुए हैं?

....

....

....

2) संगम साहित्य में जिस प्रकार युद्धक्षेत्र की समझ का उल्लेख हुआ है उसका वर्णन कीजिए।

....

....

....

3) संगम साहित्य में घटनाओं का सजीव वर्णन किस प्रकार हुआ है?

....

....

....

7.4 रचना तथा संहिताकरण: इतिहास का निर्माण

संगम कवियों और उनकी रचनाओं को ऐतिहासिक चेतना के आधुनिक पैमाने पर नहीं मापा जा सकता है। इन शास्त्रीय कविताओं का अलग संदर्भों, अलग समयों तथा भिन्न स्थान-विशेषों में वाचन/गायन किया गया था। इन कविताओं का मध्यकाल में संहिताकरण तथा संशोधन हुआ।

संगम शब्द का प्रयोग व्रजनंदी द्वारा जैन *संघ* के लिए किया गया था। आठवीं शताब्दी में इरैनार अकप्पोरुल द्वारा स्वयं भगवान शिव द्वारा रचित कही व मानी गई इन कृतियों का वर्तमान स्वरूप में संहिताकरण किया गया। पेरुतेवनार द्वारा संकलित किए जाने और कुछ संकलनों में वंदनीय पद्य जोड़े

जाने से पूर्व बेतरतीब (random) ढंग से कविताओं को संकलित व संहिताबद्ध किया गया और कुछ लोगों द्वारा इनमें पुष्पिकाएँ (colophones) जोड़ी गईं। बाद के काल में मौखिक परम्पराओं को अभिलिखित किया गया और कविताओं को उनकी शैली और विषयवस्तु के आधार पर श्रेणीबद्ध किया गया।

7.5 अतीत का प्रमाणीकरण: संगम युग की ऐतिहासिकता

संगम रचनाओं तथा संगमकालीन शासकों को समकालीन और बाद के समय की कृतियों में स्थान दिया गया है। दिलचस्प रूप से *रामायण* में कावट नगर का उल्लेख आता है जो अपने मोतियों के लिए विख्यात था और पांड्य शासकों द्वारा शासित था।

कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* में भी पांड्य कावट के मोतियों का संदर्भ मिलता है। अशोक का तेरहवाँ शिलालेख दक्षिणी पड़ोसियों के रूप में चेरों, चोलों, पांड्यों और सत्यपुत्रों का उल्लेख करता है। सत्यपुत्रों की पहचान जंबई में प्राप्त तमिल ब्राह्मी अभिलेख के आधार पर तगादुर क्षेत्र (आधुनिक समय में पश्चिमी तमिलनाडु का धरमपुरी क्षेत्र) के अथियमान वंश से की गई है। इस अभिलेख, जिसकी तिथि लगभग पहली शताब्दी सी ई मानी गई है, में उद्धृत है, 'सतियपुथो अधिय नेडुमनंजी ईथा पाली'। इसमें दर्ज है कि सत्यपुत्र अथियमान ने जैन भिक्षु हेतु पाषाण शय्या का दान किया। अशोक का अभिलेख संगम कविताओं की ऐतिहासिकता सिद्ध करने की युक्ति के रूप में लिया जा सकता है।

राजा खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख इस राजा की 113 वर्ष से अस्तित्व में रहे द्रामिड़ संघ पर विजय का उल्लेख करता है। इसमें यह भी वर्णन है कि पांड्य राजा ने घोड़ों तथा हाथियों के साथ-साथ मोती तथा अन्य रत्नों की भेंट लाकर खारवेल का सम्मान किया।

दूसरी शताब्दी सी ई में तिथिबद्ध किया गया तथा तमिल-ब्राह्मी में लिखित पुगलुर अभिलेख चेर वंश के तीन राजाओं का उल्लेख करता है। इसमें को आधन सेल्लीरूमपोरई, उसके पुत्र पेरुंकडुंको तथा उसके पुत्र इलांकडुंको का उल्लेख है जिन्होंने एक जैन शय्या का दान किया। इन तीन शासकों का उल्लेख संगम काव्य *पतित्रुपाथु/पथित्रुपथु* में सातवें, आठवें तथा नौवें राजाओं के रूप में उल्लेख है।

नेडुनचडायन के वेल्विकुडि ताम्रपत्रों (नौवीं शताब्दी सी ई) में एक ब्राह्मण नरकोर्रन को वेल्विकुडि ग्राम के दान का उल्लेख है जिसने इस राजा के पूर्वज पालयग मुदुकुडुमी पेरुवलुथी के लिए वैदिक यज्ञ का निष्पादन किया था। यह तमिल क्षेत्र में *ब्रह्मदेय* का प्राचीनतम साक्ष्य हो सकता है। लेकिन, कलाभ्रों ने इस क्षेत्र में अधिकार कर लिया और यह भू-दान अमान्य हो गया। कडुनकोन के नेतृत्व में पांड्यों के पुनः उदय के साथ कलाभ्रों की पराजय हुई। पांड्य राजा नेडुनचडायन के तृतीय राज्यवर्ष में एक ब्राह्मण, जो नरकोर्रन का वंशज था, राजा के पास आया और उसे वह भू-दान वापस लौटाने की याचना की। राजा ने यह ग्राम उस ग्राम के मुखिया और 50 ब्राह्मणों के बीच पुनर्वितरित किया। वेल्विकुडि ताम्रपत्र इस ऐतिहासिक घटना की निरंतरता को प्रकट करते हैं और साथ ही साहित्यिक संदर्भो को प्रमाणित भी करते हैं।

वह नक्कीरन था जिसने इरैनार अकप्पोरुल पर भाष्य लिखा था। यह कृति वर्णन करती है कि ये गीत मुशिरी के नीलकंठन के समय, जिसकी तिथि का निर्धारण आठवीं शताब्दी सी ई में किया जा सकता है, तक 10 पीढ़ियों से मौखिक रूप से हस्तांतरित हुए थे।

हमारे पास संगम काल के लिए अभिलेखीय संदर्भ हैं जिनके विषय में रामनाथपुरम के 829 सी ई में तिथि-अंकित एरुक्कनकुटी अभिलेख से पता चलता है। यह अभिलेख एक संगम परिषद् के आसन का संदर्भ देता है जिस पर तमिल कृतियों के वज़न को तोला गया था और किसी एट्टिचट्टन का उल्लेख भी मिलता है जो उस संगम के आसन पर विराजमान था।

क्रमशः 10वीं तथा 11वीं शताब्दी के चिन्नामनुर और तलवयपुरम अभिलेखों में पांड्य राजाओं द्वारा संरक्षित मदुरै के संगम परिषद् का उल्लेख मिलता है। पांड्य साम्राज्य, जो कलाभ्र शासकों की पराजय तथा राजा कडुनकोन के उदय के साथ अस्तित्व में आया था, ने अपने शासन को वैधता प्रदान करने के लिए अपनी वंशावली को पुनर्स्थापित करने हेतु सम्भवतः संगम के नाम का उपयोग किया।

संगम काल के लिए विदेशी स्रोत

संगम काल रोमन संसार के साथ अपने समृद्ध आर्थिक संबंधों के लिए जाना जाता है। संगम कविताएँ *यवनों* (विदेशियों) द्वारा संचालित जहाज़ों का उल्लेख करती हैं जो स्वर्ण लेकर आते थे और तमिल तटीय क्षेत्रों से काली मिर्च ले जाते थे (*अकनानुरु* 149)। मिस्र के बेरेनिस (Berenice) से प्राप्त काली मिर्च इस व्यापार के काव्यात्मक वर्णन की पुष्टि करती है। एक मृद्भांड पर उद्धृत तमिल ब्राह्मी अभिलेख में आए कोटरापूमन (Kotrapooman) नाम से तमिल क्षेत्र के व्यापारियों की मिस्र तथा रोम के साथ व्यापार के इस तंत्र में भागीदारी का पता चलता है।

यह तथ्य कि तटीय नगर आयात तथा निर्यात के उद्देश्य से लायी गई पण्य-वस्तुओं से गुलज़ार रहते थे संगम कविताओं तथा पुरातात्विक स्रोतों, दोनों, से अभिपुष्ट होता है। कुसैर-अल-क़ादिम (लाल सागर पर स्थित; अरब भूगोलवेत्ताओं द्वारा वर्णित कुस तथा रोमनों का मायोस होरमोस) के बंदरगाह-स्थल से तमिल ब्राह्मी अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें साथन और कनन/कानन नाम हैं जो विदेशों से होने वाले व्यापार के संबंध में संगम कविताओं से प्राप्त जानकारी को और मज़बूत बनाते हैं।

संगम साहित्य में उद्धृत स्थलों का संदर्भ यूनानी-रोमन साहित्य में मिलता है, जैसे स्ट्रैबो की *ज्योग्रफ़ी*, *पेरिप्लस ऑफ़ एरेथियन सी*, प्लिनी की *नेचुरल हिस्ट्री*, टॉलेमी की *ज्योग्रफ़ी* तथा *प्यूटिंगर टेबल* (*Peutinger Table*)। उदाहराणार्थ, वीराई मुंथुराई (जिसकी पहचान अरिकामेडु-वीरमपट्टिनम से की गई है) का संदर्भ विदेशी साहित्य में पोडुके के रूप में मिलता है। पांड्यों के बंदरगाह-नगर कोरकाई का उल्लेख कोल्चि और कोलखई (Kolkhai) के रूप में उल्लिखित है। चोलों की राजधानी उरैयूर की पहचान अर्गारू से की गई है।

रोमनों के साथ व्यापार का तमिलनाडु तथा केरल के कई पुरातात्विक स्थलों, जैसे अरिकामेडु, अलगनकुलम, कोरकाई, कावेरीपट्टिनम तथा पट्टनम, के उत्खनन से भी पता चलता है। इस प्रकार संगम साहित्य में उल्लिखित ऐतिहासिक तथ्यों की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष रूप में, हमें चारणों तथा कवियों द्वारा रचे गए गीत उपलब्ध हैं जिन्होंने उनमें ज्ञात अतीत और समकालीन, दोनों, घटनाओं को दर्ज किया जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित हुईं जिनमें उन मध्यकालीन कवियों, जिन्हें इन कविताओं का कुछ ऐतिहासिक संदर्भ याद था (जहाँ साक्ष्य नहीं थे, वहाँ उन्होंने इन्हें गढ़ा), ने नई रचनाओं और पुष्पिकाओं को जोड़ा, भाष्यों को जोड़ा, चुने हुए संकलनों और कृतियों में श्रेणीबद्ध किया, तमिल क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में इन्हें सुरक्षित रखा और अंततः यू. वी. स्वामीनाथ अय्यर के प्रयासों से इनका प्रकाशन हुआ। इस प्रकार इस विपुल साहित्य भंडार के सृजन की परम्परा व्यापक काल, सम्भवतः द्वितीय/प्रथम शताब्दी बी सी ई से 19वीं शताब्दी सी ई तक, में विस्तृत है।

यद्यपि इन कविताओं का कालक्रम संयोजनों, क्षेपकों तथा संशोधनों के जाल में उलझा हुआ है, संगम कविताओं के विषय, अंतर्वस्तु तथा इतिहास, सायास या अनायास रूप से, अतीत की कुछ निश्चित घटनाओं को दर्ज करते हैं जो तमिलों के आज से 2300 वर्ष पूर्व से 1200 वर्ष पूर्व के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।

7.6 ऐतिहासिक परम्पराओं में निहित विरासत

जिन तमिल कवियों ने इन कविताओं की रचना की उनकी ऐतिहासिक चेतना अतीत की घटनाओं को सामूहिक स्मृति के रूप में सुरक्षित रखती है। अपने अतीत को चिह्नित करना और इस विरासत को वैयक्तिक या सामूहिक स्मृति के रूप में सुरक्षित रखना ऐतिहासिक चेतना के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता है। निश्चित रूप से इसमें अतीत की स्मृति तथा समकालीन समय में वैधता के लिए उसके उपयोग के बीच अंतःक्रिया होती है। यद्यपि यह जानना भी आवश्यक है कि क्यों अतीत के कुछ निश्चित पहलू संरक्षित किए जाते हैं और लोगों की ऐतिहासिक चेतना में बने रहते हैं और क्यों कुछ को महत्व नहीं दिया जाता है। अतीत की कुछ निश्चित घटनाओं को शामिल करना और कुछ को छोड़ देना यह किसके निर्णय या विवेक पर आधारित था? क्यों केवल कुछ ही पहलू एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित हुए? संगम काल के कवियों ने कुछ निश्चित घटनाओं का ही

वर्णन क्यों किया, उनका क्या इरादा था? क्या इन कविताओं को कवियों द्वारा अपने स्वामियों को प्रसन्न करने के लिए सहसा निकल आए भावनात्मक उद्गारों के रूप में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है? क्यों विचारों की कुछ सामान्य अभिव्यक्तियों में मिथकीय कहानियाँ बुन दी जाती थीं?

इसका उत्तर किसी के पास उपलब्ध शक्ति तथा संसाधन पर निर्भर करता है। ऐतिहासिक चेतना या सामूहिक स्मृति शक्तिशाली लोगों के एक वर्ग को पहचान प्रदान करती है जिसने अपने लाभ हेतु संसाधनों को लामबंद (mobilise) किया होता है या गतिशील बनाया होता है। समय के साथ-साथ संभवतः सामूहिक स्मृति अतीत के वर्णनों में जुड़ जाती है और समकालीन तथा बाद के समय की ऐतिहासिक परम्पराओं में स्थान बना लेती है।

अतीत-संबंधी मिथकों और ऐतिहासिक स्मृतियों, जो किसी समाज की ऐतिहासिक चेतना का निर्माण करती हैं, का संगम काल के कवियों द्वारा संभवतः अपने संरक्षणदाताओं की आवश्यकताओं के हिसाब से उपयोग किया गया जिन्हें अपनी सत्ता और शक्ति के लिए वैधता की आवश्यकता थी। इस ऐतिहासिक परम्परा के साथ ही ऐतिहासिक वर्णन इतिहास के एक अंश का निर्माण करते हैं जिसको साहित्य में गौरवशाली रूप से प्रस्तुत किया जाता है। अपनी विविधतापूर्ण अंतर्वस्तु के साथ संगम साहित्य न केवल उन ऐतिहासिक परम्पराओं को सामने लाता है जो इन कविताओं के संकलन से पूर्व अस्तित्व में रही थीं बल्कि साथ ही एक नए ऐतिहासिक आख्यान को भी गढ़ता है जिसने तमिल क्षेत्र के इतिहास का आधार तैयार किया था।

बोध प्रश्न-4

1) क्या संगम साहित्य को इतिहास-निर्माण में सहायक कहा जाना उचित है?

....
....
....
....

2) संगम साहित्य में मौजूद ऐतिहासिक चेतना का उल्लेख कीजिए।

....
....
....
....

3) संगम साहित्य में विदेशियों की उपस्थिति को निरूपित करने वाले कौन से संदर्भ मिलते हैं?

....
....
....
....

4) क्या संगम कविताओं को मुखियाओं को प्रसन्न करने वाली कविताओं के रूप में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है?

....
....
....
....

5) संगम साहित्य में मिथकीय कहानियाँ विचारों की सामान्य अभिव्यक्ति में क्यों गुथी हुई हैं?

....
....
....
....

7.7 सारांश

इस इकाई में आपने *अकम* तथा *पुरम* विषय-वस्तुओं के रूप में संगम साहित्य के विषय में पढ़ा है जो अतीत की घटनाओं के साथ-साथ समकालिक प्रसंगों का वर्णन करता है। ये गीत न केवल तमिल क्षेत्र के आरम्भिक इतिहास की पुनर्रचना हेतु स्रोत उपलब्ध कराते हैं बल्कि उन घटनाओं को भी दर्ज करते हैं जो अतीत में घटित हुई थीं। समकालीन घटना-प्रसंगों के साथ प्राचीन तमिलों के अतीत का इतिहास मौखिक परम्पराओं में दर्ज होता रहा और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता रहा। ये कविताएँ ऐतिहासिक घटनाओं को दर्ज करने के उद्देश्य से नहीं रची गई हैं। ये *अकम* तथा *पुरम* के संदर्भ में भावों को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से लिखी गईं। इन ग्रंथों में ऐतिहासिक घटनाएँ सामान्य ढंग से गुथी हुई हैं और अंततः हमारे पास ऐसे काव्य-संकलन हैं जो अतीत की ऐसी ऐतिहासिक चेतना का संकेत करते हैं जो वर्तमान में भी अनवरत बनी रहती है।

7.8 शब्दावली

चेर : चेर (लगभग दूसरी शताब्दी बी सी ई-तीसरी शताब्दी सी ई) तमिल क्षेत्र के आरम्भिक ऐतिहासिक काल की तीन मुख्य शक्तियों (*मुवेंतार*) में से थे। उनकी शक्ति के प्रमुख केंद्र करूर (तमिलनाडु) तथा मुज़िरिस व थोंदि (Thondi; केरल) थे

चोल : प्रारम्भिक चोलों ने तमिलनाडु के राज्यक्षेत्र में संगम काल से पूर्व तथा संगमोत्तर काल (लगभग 600 बी सी ई-300 सी ई) में शासन किया था। उनकी शुरुआती राजधानियाँ उरैयूर/उरयूर (तिरुचिरापल्ली) तथा कावेरीपट्टिनम थीं। आरम्भिक चेरों, चोलों तथा पांड्यों का उल्लेख अशोक के अभिलेखों (दूसरा और 13वाँ शिलालेख) में हुआ है। आरम्भिक चोलों में करिकाल चोल सबसे प्रमुख था जिसका कई संगम रचनाओं में उल्लेख मिलता था

पांड्य : प्रारम्भिक पांड्यों की राजधानी कोरकाई थुथुकुडी थी जो बाद के समय में नेदुनजेलियन के काल में कूडल (मदुरै) स्थानांतरित हुई। संगम साहित्यिक कृतियों – *मदुरैकांची* तथा *शिलपदि्दकारम* – में आरम्भिक पांड्यों का उल्लेख किया गया है। पांडयों का प्रभाव क्षेत्र पश्चिम में त्रावणकोर तथा उत्तर में वेल्लारु नदी के बीच था जबकि पूर्व तथा दक्षिण में समुद्र इसकी सीमा का निर्धारण करता था। आरम्भिक पांड्यों तथा कोरकाई (Korkai) (प्रमुख समुद्री क्षेत्र) का उल्लेख प्लिनी, स्ट्रैबो तथा टॉलेमी के यूनानी विवरणों में मिलता है। पांड्य राज्यक्षेत्र मत्स्यन और मोतियों के लिए भी विख्यात था

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) देखें भाग 7.2

2) देखें भाग 7.2

3) देखें भाग 7.2

बोध प्रश्न-2

1) देखें भाग 7.3

2) देखें उप-भाग 7.3.1

3) देखें उप-भाग 7.3.1

4) देखें उप-भाग 7.3.1

बोध प्रश्न-3

1) देखें उप-भाग 7.3.2

2) देखें उप-भाग 7.3.2

3) देखें उप-भाग 7.3.2

बोध प्रश्न-4

1) देखें भाग 7.4

2) देखें भाग 7.5

3) देखें भाग 7.5

4) देखें भाग 7.6

5) देखें भाग 7.6

7.10 संदर्भ ग्रंथ

चेल्लया, जे. वी., (1946) *पथ्थुपट्टु* (कोलम्बोः जनरल पब्लिकेशन).

हार्ट, ज्योर्ज एल., (1975) *द पोयम्स ऑफ़ एनशियंट तमिल्सः देयर मिलिउ एंड देयर संस्कृत काउंटरपार्ट्स* (बर्कलीः यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस).

हार्ट, ज्योर्ज एल., (1975) 'एंशियंट तमिल लिट्रेचरः इट्स स्कॉलर्ली पास्ट एंड फ्यूचर', स्टाइन बी., (संपा.) *एसेज़ ऑन साउथ इंडिया* (हवाईः एशियन स्टडीज़ प्रोग्रामः यूनिवर्सिटी ऑफ़ हवाई), पृ. 41-63.

हार्ट, ज्योर्ज एल., एवं हेटज, हैंक, (1999) *द फ़ोर हंड्रेड सोंग्स ऑफ़ वार एंड विज़्डमः एन एंथोलॉजी ऑफ़ पोयम्स फ़्रॉम क्लासिकल तमिल, द पुरनानुरु* (न्यूयार्कः कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस).

कैलासपथि, के., (1968) *तमिल हेरोइक पोयट्री* (लंदनः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

महादेवन, आई., (2003) *अर्ली तमिल इपिग्राफ़ीः रोम द अर्लीयस्ट टाइम्ज़ टू द सिक्स्थ सेंचरी ए. डी.* (चेन्नईः हावर्ड यूनिवर्सिटी).

राजेश, वी., (2006-07) 'द मेकिंग ऑफ़ तमिल लिटरेरी कैनन', *प्रोसीडिंग्ज़ ऑफ़ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस*, 67वां सत्र, पृ. 153-161.

रामानुजन, ए. के., (1967) *इंटिरीयर लैंडस्केपः लव पोयम्स फ़्रॉम अ क्लासिकल तमिल एंथोलॉजी*, (ब्लूमिंगटनः इंडियाना यूनिवर्सिटी).

रामानुजन, ए. के., (1985) *पोयम्स ऑफ़ लव एंड वार* (न्यूयॉर्कः कोलम्बिया यूनिवर्सिटी).

शेषा अय्यर, एस. जी., (1937) *चेर किंग्स ऑफ़ द संगम पीरियड* (लंदनः लुजाक एंड कम्पनी).

सिवराजपिल्लै, के. एन., (1932) *द क्रोनोलॉज़ी ऑफ़ अर्ली तमिल्स* (मद्रासः द यूनिवर्सिटी ऑफ़ मद्रास प्रेस).

सिवथम्बी, के., (1974) 'अर्ली साउथ इंडियन सोसायटी एंड इकॉनमीः द तिनै कॉन्सेप्ट', *सोशल साइंटिस्ट*, भाग 29, पृ. 20-37.

सुब्रमणियन, एन., (1966) *संगम पॉलिटी* (लंदनः एशिया पब्लिशिंग हाउस).

थापर, आर., (2013) *द पास्ट बिफ़ोर असः हिस्टोरिकल ट्रडिशंज़ ऑफ़ अर्ली नॉर्थ इंडिया* (हार्वर्डः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

टिकेन एच., (2003) 'ओल्ड तमिल संकम लिट्रेचर एंड द सो कॉल्ड संकम पीरियड', *इंडियन एकनॉमिक एन्ड सोशल हिस्ट्री रिव्यू*, भाग 40, पृ. 247-278.

वैयापुरी पिल्लै, एस., (1956) *हिस्ट्री ऑफ़ तमिल लैंग्विज एंड लिट्रेचर* (मद्रासः न्यू सेंचरी बुक हाउस).

ज्वेलेबिल, के.वी., (1973) *द स्माइल ऑफ़ मुरुगन* (लीडनः ई. जे. ब्रिल).

ज्वेलेबिल, के.वी., (1975) *तमिल लिट्रेचर* (वीज़बाडनः ओट्टो हरसोविट्ज).

7.11 शैक्षणिक वीडियो

क्लासिकल लिटरेचर – अतिकल्ज़ चिलप्पतिकारम
https://www.youtube.com/watch?v=KGIZnCr1sUU

अर्ली तमिल सोसाइटी, लिटरेचर, ऐपिग्राफ़ी एंड आर्कियोलॉजी
https://www.youtube.com/watch?v=kvcp-bD2rjY

संगमएज
https://www.youtube.com/watch?v=RuyF-t96yNY

अंडरस्टैंडिंग थोलक्कापियम
https://www.youtube.com/watch?v=zWg7bRgTWTo

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY